

रविवार 23 नवंबर, 2025

विषय — आत्मा और शरीर

स्वर्ण पाठ: रोमियो 12: 1

"इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।"

उत्तरदायी अध्ययन: यिर्मयाह 31: 10-14

- 10 हे जाति जाति के लोगो, यहोवा का वचन सुनो, और दूर दूर के द्वीपों में भी इसका प्रचार करो; कहो, कि जिसने इस्राएलियों को तितर- बितर किया था, वही उन्हें इकट्ठे भी करेगा, और उनकी ऐसी रक्षा करेगा जैसी चरवाहा अपने झुण्ड की करता है।
- 11 क्योंकि यहोवा ने याकूब को छुड़ा लिया, और उस शत्रु के पंजे से जो उस से अधिक बलवन्त है, उसे छुटकारा दिया है।
- 12 इसलिये वे सिय्योन की चोटी पर आकर जयजयकार करेंगे, और यहोवा से अनाज, नया दाखमधु, टटका तेल, भेड़-बकरियां और गाय-बैलों के बच्चे आदि उत्तम उत्तम दान पाने के लिये तांता बान्ध कर चलेंगे; और उनका प्राण सींची हुई बारी के समान होगा, और वे फिर कभी उदास न होंगे।
- 13 उस समय उनकी कुमारियां नाचती हुई हर्ष करेंगी, और जवान और बूढ़े एक संग आनन्द करेंगे। क्योंकि मैं उनके शोक को दूर कर के उन्हें आनन्दित करूंगा, मैं उन्हें शान्ति दूंगा, और दुःख के बदले आनन्द दूंगा।
- 14 मैं याजकों को चिकनी वस्तुओं से अति तृप्त करूंगा, और मेरी प्रजा मेरे उत्तम दानों से सन्तुष्ट होगी, यहोवा की यही वाणी है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 107: 1-9

- 1 यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; और उसकी करूणा सदा की है!
- 2 यहोवा के छुड़ाए हुए ऐसा ही कहें, जिन्हें उसने द्रोही के हाथ से दाम दे कर छुड़ा लिया है,
- 3 और उन्हें देश देश से पूरब- पश्चिम, उत्तर और दक्खिन से इकट्ठा किया है॥
- 4 वे जंगल में मरूभूमि के मार्ग पर भटकते फिरे, और कोई बसा हुआ नगर न पाया.
- 5 भूख और प्यास के मारे, वे विकल हो गए।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिपचरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 6 तब उन्होंने संकट में यहोवा की दोहाई दी, और उसने उन को सकेती से छुड़ाया।
- 7 और उन को ठीक मार्ग पर चलाया, ताकि वे बसने के लिये किसी नगर को जा पहुंचें।
- 8 लोग यहोवा की करुणा के कारण, और उन आश्चर्यकर्मों के कारण, जो वह मनुष्यों के लिये करता है, उसका धन्यवाद करें!
- 9 क्योंकि वह अभिलाषी जीव को सन्तुष्ट करता है, और भूखे को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है॥

2. मत्ती 12: 1 (से ;), 22-29

- 1 उस समय यीशु सब्ब के दिन खेतों में से होकर जा रहा था,
- 22 तब लोग एक अन्धे-गूंगे को जिस में दुष्टात्मा थी, उसके पास लाए; और उस ने उसे अच्छा किया; और वह गूंगा बोलने और देखने लगा।
- 23 इस पर सब लोग चकित होकर कहने लगे, यह क्या दाऊद की सन्तान का है?
- 24 परन्तु फरीसियों ने यह सुनकर कहा, यह तो दुष्टात्माओं के सरदार शैतान की सहायता के बिना दुष्टात्माओं को नहीं निकालता।
- 25 उस ने उन के मन की बात जानकर उन से कहा; जिस किसी राज्य में फूट होती है, वह उजड़ जाता है, और कोई नगर या घराना जिस में फूट होती है, बना न रहेगा।
- 26 और यदि शैतान ही शैतान को निकाले, तो वह अपना ही विरोधी हो गया है; फिर उसका राज्य क्योंकर बना रहेगा?
- 27 भला, यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो तुम्हारे वंश किस की सहायता से निकालते हैं? इसलिये वे ही तुम्हारा न्याय चुकाएंगे।
- 28 पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है।
- 29 या क्योंकि कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल लूट सकता है जब तक कि पहिले उस बलवन्त को न बान्ध ले और तब वह उसका घर लूट लेगा।

3. मत्ती 16: 12-19, 24-27

- 12 तब उन को समझ में आया, कि उस ने रोटी के खमीर से नहीं, पर फरीसियों और सद्दूकियों की शिक्षा से चौकस रहने को कहा था।
- 13 यीशु कैसरिया फिलिप्पी के देश में आकर अपने चेलों से पूछने लगा, कि लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?
- 14 उन्होंने कहा, कितने तो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहते हैं और कितने एलिय्याह, और कितने यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक कहते हैं।
- 15 उस ने उन से कहा; परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?
- 16 शमौन पतरस ने उत्तर दिया, कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।
- 17 यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि हे शमौन योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है।

- 18 और मैं भी तुझ से कहता हूं, कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा: और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।
- 19 मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा: और जो कुछ तू पृथ्वी पर बान्धेगा, वह स्वर्ग में बन्धेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।
- 24 तब यीशु ने अपने चेलों से कहा; यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले।
- 25 क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा।
- 26 यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा?
- 27 मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और उस समय वह हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा।

4. मत्ती 6: 19-21, 24, 25, 33

- 19 अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं।
- 20 परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं।
- 21 क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा।
- 24 कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, वा एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा; तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।
- 25 इसलिये मैं तुम से कहता हूं, कि अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे? और क्या पीएंगे? और न अपने शरीर के लिये कि क्या पहिनेंगे? क्या प्राण भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं?
- 33 इसलिये पहिले तुम उसे राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।

5. 2 कुरिन्थियों 5: 1-9

- 1 क्योंकि हम जानते हैं, कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं परन्तु चिरस्थायी है।
- 2 इस में तो हम कराहते, और बड़ी लालसा रखते हैं; कि अपने स्वर्गीय घर को पहिन लें।
- 3 कि इस के पहिनने से हम नंगे न पाए जाएं।
- 4 और हम इस डेरे में रहते हुए बोझ से दबे कराहते रहते हैं; क्योंकि हम उतारना नहीं, वरन और पहिनना चाहते हैं, ताकि वह जो मरनहार है जीवन में डूब जाए।
- 5 और जिस ने हमें इसी बात के लिये तैयार किया है वह परमेश्वर है, जिस ने हमें बयाने में आत्मा भी दिया है।
- 6 सो हम सदा ढाढ़स बान्धे रहते हैं और यह जानते हैं; कि जब तक हम देह में रहते हैं, तब तक प्रभु से अलग हैं।

- ⁷ क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं।
- ⁸ इसलिये हम ढाढ़स बान्धे रहते हैं, और देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना और भी उत्तम समझते हैं।
- ⁹ इस कारण हमारे मन की उमंग यह है, कि चाहे साथ रहें, चाहे अलग रहें पर हम उसे भाते रहें।

6. रोमियो 12: 2

- ² और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 466: 20-21

प्राण या आत्मा देवता को दर्शाता है और कुछ नहीं। न कोई परिमित प्राण है और न ही आत्मा।

2. 310: 14 (विज्ञान)-20

विज्ञान आत्मा को ईश्वर के रूप में प्रकट करता है, पाप और मृत्यु से अछूता, — केंद्रीय जीवन और बुद्धिमत्ता के रूप में जिसके चारों ओर मन की प्रणालियों में सामंजस्यपूर्ण रूप से सभी चीजें हैं।

आत्मा बदलती नहीं। हमें आमतौर पर सिखाया जाता है कि एक मानव आत्मा होती है जो पाप करती है और आध्यात्मिक रूप से खो जाती है, - वह आत्मा खो सकती है, और फिर भी अमर हो सकती है।

3. 477: 6-8, 19-2

मनुष्य आत्मा के लिए भौतिक आवास नहीं है; वह स्वयं आध्यात्मिक है। प्राण आत्मा होने के कारण न तो अपूर्ण है और न ही भौतिक।

सवाल। - शरीर और आत्मा क्या हैं?

उत्तर। - पहचान आत्मा का प्रतिबिंब है, जीवित सिद्धांत, प्रेम के विविध रूपों में प्रतिबिंब है। आत्मा ही मनुष्य का पदार्थ, जीवन और बुद्धिमत्ता है, जो व्यक्तिगत है, लेकिन पदार्थ में नहीं। आत्मा कभी भी किसी भी चीज को हीन नहीं कर सकती।

मनुष्य आत्मा की अभिव्यक्ति है। भारतीयों ने अंतर्निहित वास्तविकता की कुछ झलकियाँ पकड़ीं, जब उन्होंने एक निश्चित सुंदर झील को "द ग्रेट स्पिरिट की मुस्कान" कहा। मनुष्य से अलग, जो आत्मा को व्यक्त करता है, आत्मा

एक अस्तित्वहीन होगा; मनुष्य, आत्मा से तलाकशुदा, अपना अस्तित्व खो देगा। लेकिन ऐसा कोई विभाजन नहीं है, हो भी नहीं सकता, क्योंकि मनुष्य ईश्वर के साथ सह-अस्तित्व में है।

4. 467: 17-28 (से 2nd.)

विज्ञान आत्मा, अंतर आत्मा को प्रकट करता है, जैसा कि शरीर में नहीं है, और भगवान मनुष्य में नहीं, बल्कि मनुष्य द्वारा परिलक्षित होता है। इससे कम में अधिक नहीं हो सकता। विश्वास है कि कम में अधिक हो सकता है एक त्रुटि है कि विफल हो जाता है। यह आत्मा विज्ञान में एक प्रमुख बिंदु है, कि सिद्धांत इसके विचार में नहीं है। आत्मा, अंतर आत्मा, मनुष्य में सीमित नहीं है, और कभी भी भौतिक नहीं है। जब हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि पदार्थ आत्मा का प्रभाव है, तो हम प्रभाव से कारण तक अपूर्ण तर्क करते हैं; लेकिन पूर्व-तर्क से पता चलता है कि भौतिक अस्तित्व रहस्यमय है। आत्मा ही सच्चा मानसिक विचार देती है। हम आत्मा, मन, की व्याख्या पदार्थ के माध्यम से नहीं कर सकते। पदार्थ न तो देखता है, न सुनता है, न ही अनुभव करता है।

5. 204: 30 (आस्था)-6

यह विश्वास कि ईश्वर पदार्थ में रहता है, सर्वेश्वरवादी है। त्रुटि, जो कहती है कि आत्मा शरीर में है, मन पदार्थ में है, और अच्छाई बुराई में है, इसे अनकहा करना चाहिए और इस तरह के बयानों से बचना चाहिए; नहीं तो परमेश्वर मानवजाति से छिपा रहेगा, और नश्वर यह जाने बिना पाप करेंगे कि वे पाप कर रहे हैं, आत्मा के बजाय पदार्थ पर निर्भर रहेंगे, लंगड़ापन से ठोकर खाएंगे, पियक्कड़पन से गिरेंगे, बीमारी से भस्म होंगे, - यह सब उनके अंधेपन के कारण होगा, परमेश्वर और मनुष्य के विषय में उनकी झूठी समझ के कारण।

6. 207: 15-18

शरीर पहले और आत्मा अंतिम नहीं है, न ही बुराई अच्छाई से अधिक शक्तिशाली है। अस्तित्व का विज्ञान स्वयं-स्पष्ट असंभवताओं को अस्वीकार करता है, जैसे कारण या प्रभाव में सत्य और त्रुटि का समामेलन।

7. 265: 3-15

मनुष्य आध्यात्मिक अस्तित्व को उसी अनुपात में समझता है जैसा कि सत्य और प्रेम के खजाने हैं। मनुष्यों को ईश्वर के प्रति समर्पण करना चाहिए, उनका स्नेह और उद्देश्य आध्यात्मिक रूप से विकसित होना चाहिए, - उन्हें होने की व्यापक व्याख्याओं के पास होना चाहिए, और अनंत के कुछ उचित अर्थों को प्राप्त करना चाहिए, - ताकि पाप और मृत्यु दर को दूर किया जा सके।

किसी भी तरह से, आत्मा के लिए कुछ भी होने का यह वैज्ञानिक अर्थ, मनुष्य को देवता में अवशोषण और उसकी पहचान के नुकसान का सुझाव देता है, लेकिन मनुष्य में बढ़े हुए व्यक्तित्व, विचार और कर्म का व्यापक क्षेत्र, एक अधिक विस्तृत प्रेम, एक उच्च और अधिक स्थायी शांति।

8. 280: 30-4

मानवीय मर्तों का मनोरंजन करने और विज्ञान होने को अस्वीकार करने का एकमात्र बहाना हमारी आत्मा का नश्वर अज्ञान है, - अज्ञान जो केवल दिव्य विज्ञान की समझ के लिए उपजता है, वह समझ जिसके द्वारा हम पृथ्वी पर सत्य के राज्य में प्रवेश करते हैं और सीखते हैं कि आत्मा अनंत और सर्वोच्च।

9. 530: 5-12

दिव्य विज्ञान में, मनुष्य ईश्वर के द्वारा कायम है, होने का दिव्य सिद्धांत। परमेश्वर के आदेश पर पृथ्वी, मनुष्य के उपयोग के लिए भोजन लाती है। यह जानकर, यीशु ने एक बार कहा था, "से कहता हूं, कि अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे?" — अपने निर्माता के विशेषाधिकार पर नहीं मानते हुए, लेकिन सभी के पिता और माता को पहचान कर, जो मनुष्य को खिलाने और कपड़े पहनने में सक्षम है, जैसे वह गेंदे के साथ करता है।

10. 359: 11-17

भले ही आप यह दावा करते हों कि भौतिक इंद्रियाँ मनुष्य के अस्तित्व या अस्तित्व के लिए अपरिहार्य हैं, आपको जीवन की मानवीय अवधारणा को बदलना होगा, और अंततः स्वयं को आध्यात्मिक और वैज्ञानिक रूप से जानना होगा। आत्मा, आत्मा, के अस्तित्व का प्रमाण केवल आध्यात्मिक इंद्रियों को ही प्रत्यक्ष है, और भौतिक इंद्रियों को स्पष्ट नहीं है, जो केवल आत्मा के विपरीत को ही पहचानती हैं।

11. 399: 29-8

हमारे मास्टर ने पूछा: "कोई मजबूत आदमी के घर में कैसे घुस सकता है और अपना माल खराब कर सकता है, सिवाय इसके कि वह पहले मजबूत आदमी को बांध दे?" दूसरे शब्दों में: तथाकथित नश्वर दिमाग से शुरुआत किए बिना, मैं शरीर को कैसे ठीक कर सकता हूं, जो सीधे शरीर को नियंत्रित करता है? जब इस तथाकथित मन में बीमारी एक बार नष्ट हो जाती है, तो बीमारी का डर दूर हो जाता है, और इसलिए रोग पूरी तरह से ठीक हो जाता है। नश्वर मन "मजबूत आदमी" है, जिसे स्वास्थ्य और नैतिकता पर इसके प्रभाव से पहले अधीनता में आयोजित किया जाना चाहिए। इस त्रुटि पर विजय प्राप्त की, हम उसके माल के "मजबूत आदमी" को समाप्त कर सकते हैं, - अर्थात् पाप और बीमारी।

12. 30: 26-30

यदि हमने आत्मा को नियंत्रण रखने की अनुमति देने के लिए भौतिक अर्थों की त्रुटियों पर पर्याप्त रूप से विजय प्राप्त की है, तो हम पाप को कम कर देंगे और हर परिस्थिति में उसे फटकार देंगे। केवल इस तरह से हम अपने दुश्मनों को आशीर्वाद दे सकते हैं, हालांकि वे हमारे शब्दों को नहीं समझ सकते।

13. 302: 19-24

मनुष्य के पूर्ण, यहाँ तक कि पिता के रूप में भी पूर्ण होने का विज्ञान बताता है, क्योंकि आध्यात्मिक मनुष्य का आत्मा या मन, ईश्वर है, जो सभी का दिव्य सिद्धांत है, और क्योंकि यह वास्तविक व्यक्ति आत्मा के बजाय आत्मा के नियम द्वारा शासित है, न कि पदार्थ के तथाकथित नियमों द्वारा।

14. 590: 1-3

पदार्थ नश्वर मन की आदिम मान्यता है, क्योंकि इस तथाकथित मन का आत्मा के प्रति कोई संज्ञान नहीं है। नश्वर मन के लिए, सामग्री पर्याप्त है, और बुराई वास्तविक है। नश्वर की तथाकथित इंद्रियां भौतिक हैं। इसलिए नश्वर का तथाकथित जीवन सामग्री पर निर्भर है।

15. 9: 17-24

क्या आप "अपने भगवान को अपने प्रभु और अपने सभी प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखते हैं"? इस आदेश में बहुत कुछ शामिल है, यहां तक कि सभी भौतिक संवेदना, स्नेह और पूजा का समर्पण भी। यह ईसाई धर्म का एल डोराडो है। इसमें जीवन का विज्ञान शामिल है, और केवल आत्मा के दिव्य नियंत्रण को मान्यता देता है, जिसमें आत्मा हमारा स्वामी है, और भौतिक अर्थ और मानव का कोई स्थान नहीं होगा।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्विणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6